2

रामायण–II

पिछले पाठ में आपने राम के चारित्रिक गुणों के विषय में पढ़ा। इस पाठ में आप राम के वनवास तथा उनसे संबंधित अन्य घटनाओं के विषय में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे–

- इस पाठ के श्लोकों का शुद्ध उच्चारण कर पाने में; और
- रामायण की प्रसङ्गनुसार कहानी को बता पाने में।

2.1 श्लोक 21–40

;kojkT;u l;kä ePNRçhR;k eghifr%A
rL;kfHk"kd lEHkkjkUn"Vok Hkk;k-Fk dd;hAA1-1-21AA

ioS nÙkojk noh ojeue;kprA
fookl u p jkeL; HkjrL;kfHk"kpueAA1-1-22AA

राम के राज्याभिषेक की तैयारियों को देखकर, कैकेयी ने राजा दशरथ से पूर्व में प्राप्त दो वरों के अनुपालन में, उनमें राम को वनवास देने तथा उसके स्थान पर भरत का राज्याभिषेक किये जाने की मांग की।

l lR;opukæk tk èkelik'ku l;r%A
fookl;kekl lr jke n'kjFk% fç;eAA1-1-23AA

दशरथ जो कि वचनों के पक्के थे, अपने कर्त्तव्य में बंधे हुए थे, इसलिए उन्होंने अपने प्रिय पुत्र राम को वन में जाने की आज्ञा दी।

l txke ou ohj% çfrKkeuikY;uA
firqopufun'kkRdSd¸;k% fç;dkj.kkr· AA1-1-24AA

भगवान राम माता कैकेयी की इच्छा तथा अपने पिता के आदेश को मानकर, अपने पिता द्वारा कैकेयी को दिए वचनों की पालना हेतु वन में चले गये।

ra oztUra fç;k Hkkrk y{e.kks·uqtxke gA
Lugkf}u;lEiUuL lqfe=kuUnoèkZu%AA1-1-25AA

Hkkrja nf;rks HkkrqL lkHkk=eun'k;uA
jkeL; nf;rk Hkk;kZ fuR;a çk.klek fgrkAA1-1-26AA

tudL; dy tkrk noek;o fuferkA
loy{k.k lEiUuk ukjh.kkeÙkek oèkAA1-1-27AA

lhrkI;uxrk jke 'kf'ku jkfg.kh ;FkkA
ikjjuxrk nj fi=k n'kjFku pAA1-1-28AA

राम के प्रिय भाई लक्ष्मण भी उनके पीछे–पीछे वन चले गये। शील के धनी, लक्ष्मण मां सुमित्र की खुशी के स्रोत थे। स्नेह और विनय वश (भातृ प्रेम को प्रकट करते हुए) वो भी राम के साथ वन में चल दिये।

जनक परिवार में पैदा हुई और दशरथ की पुत्रवधु सीता, राम की प्रिय जीवन संगिनी, उसकी मानों सांसे थी, वह राम की खुशी को ध्यान में रखकर राम के पीछे–पीछे इस तरह चल रही थी मानों चन्द्रमा के साथ–साथ रोहिणी चल रही हो। सभी गुणों से युक्त वह एक आदर्श नारी थी।

Ükf³xcjij lr x³xkdy 0;lt;r A
xgeklk| èkekRek fu"kknkfèkiÇr fç;e AA1-1-29AA

xgu lfgrk jkek y{e.ku p lhr;k A
r ouu ou xRok unhLrhRok cgndk AA1-1-30AA

महाराज दशरथ तथा उस के साम्राज्य की प्रजा भी राम के वनवास के समय उनके साथ काफी दूर तक चले जा रहे थे। उत्तम प्रकृति के राम श्रृङ्गिबेरपुर में

निषादराजा के गृह के पास पहुंचकर सभी दरबारियों को सुमंत्र (सारथी) के साथ वापस भेज दिया तथा राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ गंगा नदी पार की।

fp=dVeuçkl; Hkj}ktL; 'kklukr~A
jE;eko lFk dRok jeek.kk ou =;%AA1-1-31AA

noxUèkoS l ³~dk'kkLr= rs U;olu~ l q[keA
fp=dVa xrs jkes iq='kksdkrqjLrFkkAA1-1-32AA

राम जब चित्रकूट के लिए प्रस्थान ही कर रहे थे तभी पुत्र से बिछुड़ने के वियोग में राजा दशरथ का स्वर्गवास को गया।

जंगल दर जंगल भटकते हुए और गहरे पानी से भरी हुई गहरी और चौड़ी नदियों को पार कर के भारद्वाज ऋषि के बताये अनुसार चित्रकूट पहुंचे।

वहां पर उन्होंने चित्रकूट के पहाड़ों के बीच पेड़ के पत्तों से एक झोंपडी का निर्माण किया और देवों तथा गंधर्वों के सदृश खुशी–खुशी जीवन व्यतीत करने लगे।

jktk n'kjFkLLox% txke foyiUl qreA
e`rs rq rfLeUHkjrks ofl"Bçeq[kS}t%AA1-1-33AA

राजा दशरथ की मृत्यु के पश्चात् वसिष्ठ आदि अन्य विद्वत्जनों ने भरत का राजतिलक करना चाहा परंतु भरत की शासन करने की इच्छा नहीं थी।

fu;|T;ekuk jkT;k; uPNækT;ı egkcy%A
l txke ou ohjk jkeiknçlknd%AA1-1-34AA

भरत जिसने ईष्यालु तथा नफरत करने वालों अर्थात (सभी दुश्मनों) पर विजय प्राप्त कर राम के पादों की पूजा–अर्चना के लिए उन्हें मनाकर वापस लाने के लिए, वन में चले गये।

xRok r| lµegkRekuı jkeı lR;ijkØeeA
v;kpnHkkrjı jkeek;Hkko iµjLd`r%AA1-1-35AA

Roeo jktk èkeZK bfr jkeı opk·czohrA
jkek·fi ijeknkjLlµe[kLlµegk;'kk%AA1-1-36AA

u pPNfRirµjkns'kkækT;ı jkek egkcy%A
iknd pkL; jkT;k; U;kl nRok iµu%iµu% AA1-1-37AA

सत्य पराक्रमी, महात्मा स्वरूप राम जी के पास पहुँचकर भरत ने अत्यन्त विनय भाव से प्रार्थना की–हे राम ! आप धर्मज्ञ हैं (अर्थात धर्मशास्त्र की आज्ञा है कि बड़े भाई के सामने छोटा भाई राज्य नहीं पा सकता) अतः आप ही राजा होने के योग्य हैं। परंतु राम के अत्यन्त प्रसन्नवान, उदार और यशस्वी कोने पर भी, उन महाबली राम ने पिताजी के आदेशनुसार राज्य करना स्वीकार नहीं किया और राज्य का कार्य चलाने के लिए अपनी (प्रतिनिधि) खड़ाऊ (पादुका) भरत को दी।

fuor l;kekl rrk Hkjr Hkjrkxt%A
l dkeeuokI;so jkeikn kiLi'kuAA1-1-38AA

राम ने भरत को अनेक बार समझा कर वापस भेज दिया। भरत श्रीराम द्वारा अपने मनोरथ को प्राप्त कर उनके चरणों को स्पर्श किया।

ufUnxkes·djksækT;a jkekxeudk³{k;kA
xrs rq Hkjrs Jheku~ lR;lU/kks ftrsfUæ;%AA1-1-39AA

jkeLrq iqujky{; ukxjL; tuL; pA
r=kxeuedkxzks n.Mdkj.;a foos'k gAA1-1-40AA

उसके बाद भरत राम के लौटने की प्रतीक्षा करते हुए नन्दिग्राम से शासन करने लगे। भरत के लौट जाने पर सत्य और जितेन्द्रिय राम ने यह विचार कर कि यहाँ चित्रकूट में अयोध्यावासियों का आना जाना शुरू हो गया है, राम वहां से दण्डकारण्य वन में चले गये।

पाठगत प्रश्न 2.1

1. दशरथ से किसने वर प्राप्त किये थे?
2. राम के साथ वन में कौन गये थे?
3. सीता के पिता कौन थे?
4. दशरथ की मृत्योपरांत अयोध्या पर किसने शासन किया?

आपने क्या सीखा

- सीता और लक्ष्मण के साथ राम का वनगमन।
- दशरथ की मृत्यु।
- अयोध्या पर भरत का शासन।
- कैकेयी के वरदान।

पाठांत प्रश्न

1. भरत जंगल में क्यों गये थे?
2. कौन से पर्वत पर राम रुके थे?
3. दशरथ की मृत्यु का मुख्य कारण क्या था?

उत्तरमाला

2.1

1. कैकेयी
2. सीता और लक्ष्मण
3. जनक
4. भरत